International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 12-05-2025, Accepted: 11-06-2025, Published: 26-06-2025
Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 28-30

हिन्दी उपन्यासों में पौराणिकता

पार्वती बारिक[1], डॉ. स्नेहलता दास[2]
[1] शोध छात्रा रमादेवी महिला विश्वविद्यालय विद्या विहार, भवनेश्वर ओड़िशा, भारत
[2] विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग रमादेवी महिला विश्वविद्यालय विद्या विहार, भवनश्वर ओड़िशा, भारत

सारांश
पौराणिक पात्रों और कथाओं के माध्यम से सामाजिक मूल्यों और आदर्शों को साहित्य में स्थापित करने की परंपरा हिंदी पौराणिक उपन्यासों ने शुरू की। हिंदी में रचित महत्वपूर्ण पौराणिक उपन्यासों में प्राचीन आदर्शों, विचारों, संस्कारों एवं मूल्यों को पुनर्स्थापित किया गया है। प्रमुख पौराणिक उपन्यास कुछ इस प्रकार हैं– वयं रक्षाम, वैशाली की नगरवधू, अभ्युदय, महासमर, वरुण पुत्री, सीता आदि। इन उपन्यासों ने हिंदी उपन्यास जगत को और भी प्रशस्त किया है।

मूल शब्दः उपन्यास, पुराण, पौराणिकता ,इतिहास ,जीवन मूल्य

साहित्यिक रचनाओं का विकास संसार के कोने–कोने में सदियों से होता आ रहा है। स्थिति, वातावरण और व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण ही साहित्य की विभिन्न धाराएं विकसित हुई हैं और आज भी होती आ रही हैं। बहरहाल, हिन्दी साहित्य की ओर दृष्टिपात करने पर आधुनिक युग कीचमत्कृत भूमिका उभरकर सामने आती है। यह युग हिन्दी साहित्य के लिए एक महत्वपूर्ण, सशक्त और समृद्ध युग बनकर सामने आया है। हिन्दी कथा साहित्य के समस्त विधाओं में सर्वाधिक उपलब्धि उपन्यास को मिली है। उपन्यास में मानव जीवन का समावेश मिलता है। उपन्यास के इसी व्यापक एवं विस्तृत चित्रण के कारण ही आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में यह एक सर्वोपरि विधा के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत है।

आधुनिक युग का महाकाव्य और प्रतिनिधि विधा के रूप में 'उपन्यास' गद्य के विकास की एक महत्वपूर्ण परिधि के रूप में जानागया है। उपन्यास का उद्देश्यमात्र मनोरंजन नहीं होता। उनमें सामाजिक मूल्यों का, लेखक के विचारों का और भाषाआदि का विशेष स्थान रहता है। प्रत्येक उपन्यास एक दूसरे से कई धाराओं में अलग होते हैं। किसी की भाषा अलग होती है, किसी की कथावस्तु अलग होती है। किसी में घटनाओं का सीधा–सीधा वर्णन मिलता है, तो किसी में घटनाओं को मोड़ दिया जाता है। इससे यही स्पष्ट होता है कि उपन्यासों के कई प्रकारतथा भेद पाए जाते हैं। कुछ उपन्यास तत्कालीन परिस्थिति से संबद्ध होते हैं, कुछ उपन्यास ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए लिखे जाते हैं। कुछ सामाजिक जीवन को जोड़ते हैं, तो कुछ पारिवारिक विचारधाराओं को लेकर चलते हैं। कुछ उपन्यास ऐसे भी पाए गए हैं जो समकालीन स्थिति से जुड़े तो अवश्य हैं, मगर उनकी जड़ें हर तरह से पौराणिकता की मिट्टी से सींची हुई हैं। इस तरह विषयवस्तु की दृष्टि से उपन्यास के चार प्रकार पाए जाते हैं– ऐतिहासिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं पौराणिक।

"प्राचीन होकर नवीन जैसे लगे, वह पुराण है""[1] ('पुरानवंभवति')दृ यास्क मुनि के इनशब्दों से पुराण और पौराणिकता का कुछ–कुछ आधार सामने आता है। 'पुराण' (अंग्रेजी में 'माईथालौजी') का शाब्दिक अर्थ है पुराना या प्राचीन, जो सदा ही जीवित रहे। वायु पुराण के अनुसार "पुराण शब्द की व्युत्पत्ति 'पुरा' प्राचीन काल में, पहले एवं धातु 'अन' सांस लेना या जीना से की गई है। अतः इसके अनुसार पुराण का शाब्दिक अर्थ है ""जो अतीत में जीवित है, अथवा जो प्राचीन काल की सांस लेता है।""[2] पद्म पुराण के अनुसार "वह पुराण कहलाता है जो अतीत को चाहता है अथवा उसे पसंद करता है। संक्षेप में पुराण शब्द साधारणतया 'पुराण' अर्थ में कोशकारों ने स्वीकार किया है।""[3]

पुराण मूलतः हिन्दू धर्म के धार्मिक ग्रंथों के स्रोत हैं जिसमें संसार के आरंभ से लेकर अंत तक का वर्णन मिलता है। इनमें प्राचीन ऋषि–मुनियों, राजाओं, दिव्य पुरुषों, देवी–देवताओं आदि के जीवन गाथाओं का परिचय मिलता है। पूजा–अर्चना, उपवास, भक्ति, पाप–पुण्य, धर्म–अधर्म, स्वर्ग–नरक; यानि कि जीवन से लेकर मृत्यु तक का वर्णन आपको इन पुराणों में मिल जाएगा।

'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' के अनुसार दृ ""पौराणिक विश्वासों के भीतर दन्त कथाओं, वंशानुक्रम और इतिहास को भी समेट लिया गया है। वस्तुतः 'पुराण' शब्द का प्रयोग बहुत व्यापक अर्थ में होता है और बहुत से लोग तो उसे दन्त कथाओं और इतिहास का समानार्थी भी मानते हैं।""[4]

पुराण भारतीय संस्कृति की धरोहर है, जिनमें नवीनता का रस है। कहना न होगा कि पौराणिक कथाओं के अथाह सागर में भारत को सींचा गया है। डॉ. सत्येन्द्र का मत है कि, "केवल देवी–देवताओं से कोई 'कहानी' धर्म गाथा नहीं हो सकती। कितनी ही लोक–कहानियाँ ऐसी हैं, जिनमें शिव–पार्वती, विष्णु आदि का उल्लेख मिलता है, पर उन्हें धर्म गाथा नहीं कहा जा सकता। किसी तथ्य की व्याख्या करने वाली कहानियों में भी देवी–देवताओं का समावेश होता है पर उन्हें भी सदैव धर्म गाथा नहीं कह सकते।""[5] समकालीन पौराणिक उपन्यासों में जो कथावस्तु अपनाई जाती है, उसे आज के मनुष्य के प्रति विशिष्ट चिंता का साधन कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। शिव प्रसाद सिंह, मनु शर्मा, भगवान सिंह, युगश्वर, शिवशंकर पटनायक, डॉ. भगवती शरण मिश्र, पद्मा सचदेव, सविता चड्ढा, सुधीर निगम, शिवाजी सावंत, मृदुला सिन्हा, नरेंद्र कोहली आदि कई उपन्यासकार सामने आए जिन्होंने गहनतापूर्वक पौराणिक उपन्यासों को 'साहित्य' बनाया।

पौराणिक उपन्यासकारों ने अपनी कथावस्तु को न केवल वर्तमान के संदर्भ में समतल बनाया बल्कि इसे वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि भी प्रदान की। इस तरह से इन सभी लेखकों ने एक आदर्श स्थापित किया है। पौराणिक उपन्यासकार मनु शर्मा द्वारा लिखित पौराणिक उपन्यास 'कृष्ण की आत्मकथा' की प्रशंसा करते हुए पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी कहते हैं कि – ""इस उपन्यास को पढ़ते समय मैं इतना खो गया था कि अपना ज़रुरी काम तक भूल गया। पहली बार श्री कृष्ण के

चरित्र को किसी साहित्यकार ने इतना व्यापक आयाम दिया है।""[6] तर्कसंगत होकर, सत्य को बनावटीपन से मुक्तकर के आधुनिक भारतीय समाज में पौराणिक उपन्यासों को उत्कृष्ट बनाना आसान नहीं रहा होगा। आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने 'वयंरक्षामः' उपन्यास की भूमिका 'पूर्व निवेदन' में लिखा है– ""सत्य की व्याख्या साहित्य की निष्ठा है। उसी सत्य की प्रतिष्ठा में मुझे प्राग्वेदकालीन नृवंश के जीवन पर प्रकाश डालना पड़ा है।""[7]

आज का समाज असामाजिक तत्वों से घिरा हुआ है। आज कोई भी मुद्दा एक–दो घरों तक सीमित नहीं रहकर समाज के एक बड़े हिस्से को प्रभावित करता है। इन परिस्थितियों में समाज का आईना कहे जाने वाला 'साहित्य' अपनी भूमिका पर खरा उतरता है। साहित्य की तटस्थता कायम रखने में जितना योगदान पुरातन साहित्यकारों ने दिया था, उसकी नींव आज भी उतनी ही मजबूती से टिकी हुई है।

हिन्दी साहित्य में हर दिन कुछ न कुछ नए प्रयोग देखने को मिलते हैं। पौराणिक उपन्यास भी ऐसे ही अनेक प्रयोगों में से एक है, जो काफी सफलतापूर्वक वर्तमान मानव जीवन को बड़ी ही संवेदनशीलता के साथ आईना दिखाता है। जातिगत भेदभाव को 'कर्ण' के माध्यम से उजागर करने वाली 'नरेन्द्र कोहली' जी की रचना 'महासमर' हो या फिर धार्मिक दंगों तथा मतभेदों के कारण होने वाली समस्या को आधार बनाकर लिखा गया उपन्यास 'अभ्युदय' हो; आज की नारी की समस्याओं को पौराणिकता का वस्त्र पहनाकर सामने लानेवाली 'मनु शर्मा' जी की रचना 'द्रौपदी की आत्मकथा' हो या 'गांधारी की आत्मकथा' द्वारा नारी जीवन के संघर्षों को सामने रखना हो, पौराणिक उपन्यासों में इसी प्रकार अनेक सामाजिक समस्याओं को उद्घाटित किया गया है और आगे भी निःसंदेह किया जाएगा। इन सब विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजी का एक मुहावरा इस संदर्भ में एकदम सटीक बैठ रहा है– "New wine in old bottle"

पौराणिक पात्रों और कथाओं के माध्यम से समाजिक मूल्यों और आदर्शों को साहित्य में स्थापित करने की परंपरा हिन्दी पौराणिक उपन्यासों ने शुरू की। हिन्दी में रचित उन महत्वपूर्ण पौराणिक उपन्यासों का विवरण जिनमें प्राचीन आदर्शों, विचारों, संस्कारों एवं मूल्यों को पुनर्स्थापित किया गया, वे निम्नलिखित हैं:

1. आचार्य चतुर्सेन शास्त्री

- **वयं रक्षाम(1951):** यह उपन्यास मुख्य रूप से राक्षस वंश के गौरव, उनके संघर्ष और पतन की कथा है। राक्षसों को दुष्ट के रूप में चित्रित करने की पारंपरिक धारणा को चुनौती देकर उन्हें सभ्य वैज्ञानिक और गौरवशाली रूप में प्रस्तुत किया गया है। कथावस्तु रावण, मंदोदरी, कुंभकर्ण, विभीषण जैसे पात्रों के दृष्टिकोण से रामायण की पुनर्कल्पना की गयी है।

- **वैशाली की नगरवधु (1948):**यह हिन्दी साहित्य का एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक और पौराणिक उपन्यास है। यह उपन्यास प्राचीन भारत के प्रसिद्ध नगर वैशाली के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसकी कहानी बौद्ध काल से संबद्ध है। उपन्यास में गणराज्य के पतन सामाजिक असमानता और नैतिक मूल्यों के ह्रास को प्रमुख रूप से चित्रित किया गया है।

2. नरेंद्रकोहली

- **अभ्युदय(1988):**यह नरेंद्र कोहली का प्रसिद्ध पौराणिक उपन्यासों में से एक है। यह उपन्यास मुख्यतः रामकथा पर आधारित है और आधुनिक हिंदी साहित्य में रामायण के पुनः पाठ का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका उद्देश यह दर्शाना था कि राम का आदर्श केवल व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं है बल्कि समाज और राष्ट्र निर्माण में भी उनका योगदान है। यह उपन्यास रामायण के प्रमुख पात्रों, घटनाओं और उनके संघर्षों का विस्तृत वर्णन करता है।

- **महासमरः** महासमर नरेंद्र कोहली का एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है। यह महाभारत पर आधारित है और इसे आधुनिक जीवनदृष्टि से लिखा गया है। इस उपन्यास में महाभारत की घटनाओं को एक नए और रोचक तरीके से दिखाया गया है। इसमें महाभारत के किस्से और प्राचीन कथाएं भी शामिल हैं. यह उपन्यास कुलनौ खंडों (1988 से 2010 तक प्रकाशित) में है।

- **वरुणपुत्री (2017)–** पुराणों की भूमिका आधुनिक दृष्टिकोण तथा कल्पना का समन्वय करने वाला उपन्यास 'वरुण पुत्री' आज की आधुनिक जीवनशैली को प्रभावित करने वाले सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है।

3. अमिश त्रिपाठी

सीताः मिथिला की योद्धा (2021): यह उपन्यास रामायण की प्रमुख पात्र सीता के जीवन को एक नए दृष्टिकोण में प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में सीता को एक आदर्श महिला के रूप में नहीं बल्कि एक साहसी, निडर और ताकतवर महिला के रूप में चित्रित किया गया है। यह उपन्यास सीता की कर्मठता, साहस और संघर्ष को केंद्र में रखता है, जो उन्हें राम की पत्नी से कहीं अधिक एक स्वतंत्र और शक्तिशाली नायिका के रूप में प्रस्तुत करती है। रामायण के घटनाक्रम को सीता के दृष्टिकोण से पुनः देखा गया है, जहाँ उनका संघर्ष केवल अपनी पहचान हो, प्रेम के प्रति नहीं बल्कि समाजिक और पारिवारिक दायित्वों से भी जुड़ा हुआ हो।

- **मेलुहा के मृत्युंजयः** यह अमिश त्रिपाठी द्वारा लिखा गया एक बेस्टसेलर उपन्यास है। यह उपन्यास भगवान शिव पर आधारित 'शिव ट्रायोलॉजी सीरीज' का पहला हिस्सा है। इसकी कहानी एक प्राचीन देश मेलुहा के बारे में है जिसे भगवान राम ने बसाया था। इस कहानी में मेलुह के राजा दक्ष शिव को चंद्रवंशियों के खिलाफ युद्ध में मदद के लिए बुलाते हैं। मेलुहा के लोग शिव को नीलकंठ का नाम देते हैं। इस उपन्यास में शिव और सती के प्रणय का रोमांचक चित्रण किया गया है।

पौराणिक उपन्यासों के महत्व को जानने के बाद यह बात स्वीकारने में खेद होती है मगर इनकी सर्वाधिक उपेक्षा हुई है। तुलनात्मक दृष्टि से पौराणिक उपन्यास कम लिखे गए हैं। वहीं जितने लिखे गए हैं, उनकी जितनी चर्चा होनी चाहिए थी, उतनी नहीं हुई है। समाज में 'नारी–विमर्श' और 'दलित–विमर्श' पर काफी विचार–विमर्श किया जाता है, बैठकों का आयोजन किया जाता है। ऐसे में पौराणिक उपन्यासों में इन दोनों विमर्शों पर काफी चर्चा होती है। इन सब विशेषताओं के बावजूद भी पौराणिक उपन्यासों पर उतना ध्यान नहीं दिया गया, जितने का वह हकदार था। पौराणिक उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं में पौराणिक पात्रों के देवत्व को कहीं न कहीं हटाकर उनको भी मानवीय धरातल पर प्रस्तुत किया है, जो अपनी सबलताओं और निर्बलताओं के साथ चित्रित किए गए हैं। उदाहरण के तौर पर पहले ही कई उपन्यासकार और उनकी रचनाओं की चर्चा की जा चुकी है। ऐसी उत्कृष्ट रचनाओं के विकास धारा की गति न कभी रुकी थी और न ही कभी रुकेगी। बदलाव जीवन का नियम है।

जिस प्रकार उपन्यास के क्षेत्र में परिवर्तन हुए हैं, उसी प्रकार पौराणिक उपन्यास के इन हालातों में भी सकारात्मक सुधार अवश्य होगा।

संदर्भ सूची

1. भारद्वाज, डॉ. मदनमोहन, आधुनिक हिन्दी–मराठी नाटकों में युग–बोध, पृ– 86
2. वही, पृ– 86
3. ब्रिटेनिका रेडी रिफ्रेन्स एनसाइक्लोपीडिया, पृ– 37
4. डॉ. सत्येन्द्र, मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतांत्रिक अध्ययन, पृ–39
5. https: @@navbharattimes&indiatimes&com&cdn-ampproject-org
6. **वयंरक्षामः**–भूमिका – पूर्व निवेदन से, पृ. 8–9
7. इबतवार, (डॉ.) नरेंद्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन, श्रीनिवास पब्लिकेशन, जयपुर, सं–2008
8. अभ्युदय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
9. बेचन, (डॉ.) आधुनिक हिन्दी उपन्यासः उद्‌भव और विकास सन्मार्ग प्रकाशन, 16, यू. बि. बैंग्लोरोड, दिल्ली, सं.–1971
10. https: @@hi-wikipedia org@wiki@,sfrgkfld&miU;kl
11. https: @@hi-wikipedia-org@wiki@ikSjkf.kd&miU; kl